

C.B.S.E Board

कक्षा : 10

हिंदी A

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 80

**सामान्य निर्देश :**

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

**खंड - क**

- प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×3=6) (1×2=2) 8
- महात्मा गांधी ने कोई 12 साल पहले कहा था - मैं बुराई करने वालों को सजा देने का उपाय ढूँढ़ने लगूँ तो मेरा काम होगा उनसे प्यार करना और धैर्य तथा नम्रता के साथ उन्हें समझाकर सही रास्ते पर ले आना। इसलिए असहयोग या सत्याग्रह घृणा का गीत नहीं है। असहयोग का मतलब बुराई करने वाले से नहीं, बल्कि बुराई से असहयोग करना है।
- आपके असहयोग का उद्देश्य बुराई को बढ़ावा देना नहीं है। अगर दुनिया बुराई को बढ़ावा देना बंद कर दे तो बुराई अपने लिए आवश्यक पोषण के अभाव में अपने-आप मर जाए। अगर हम यह देखने की कोशिश करें कि आज समाज में जो बुराई है, उसके लिए खुद हम कितने जिम्मेदार हैं तो हम देखेंगे कि समाज से बुराई कितनी जल्दी दूर हो जाती है। लेकिन हम प्रेम की एक झूठी भावना में पड़कर इसे सहन करते हैं। मैं उस प्रेम की बात नहीं करता, जिसे पिता अपने गलत रास्ते पर चल रहे पुत्र पर मोहंध होकर बरसाता चला जाता है, उसकी पीठ थपथपाता है; और न मैं उस पुत्र की बात कर रहा हूँ जो झूठी पितृ-भक्ति के कारण अपने पिता के दोषों को सहन करता है। मैं उस प्रेम की चर्चा नहीं कर रहा हूँ। मैं तो उस प्रेम की बात कर रहा हूँ, जो

विवेक युक्त है और जो बुद्धियुक्त है और जो एक भी गलती की ओर से आँख बंद नहीं करता है। यह सुधारने वाला प्रेम है।

1. गांधीजी बुराई करने वालों को किस प्रकार सुधारना चाहते हैं?
2. बुराई को कैसे समाप्त किया जा सकता है?
3. 'प्रेम' के बारे में गांधीजी के विचार स्पष्ट कीजिए।
4. असहयोग से क्या तात्पर्य है?
5. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (1×3=3)

हम अनिकेतन, हम अनिकेतन!

हम तो रमते राम, हमारा क्या घर, क्या दर, कैसा वतन?  
अब तक इतनी यों ही काटी, अब क्या सीखें नव परिपाटी  
कौन बनाए आज घरोंदा हाथों चुन-चुन कंकड़-माटी  
ठाठ फ़कीराना है अपना, बाघंबर सोहे अपने तन।  
देखे महल, झोंपड़े देखे, देखे हास-विलास मजे के  
संग्रह के सब विग्रह देखे, जँचे नहीं कुछ अपने लेखे  
लालच लगा कभी पर हिय में मच न सका शिणित उद्वेलन।  
हम जो भटके अब तक दर-दर, अब क्या खाक बनाएँगे घर  
हमने देखा सदन बने हैं लोगों का अपनापन लेकर  
हम क्यों सनें ईट-गारे में? हम क्यों बनें व्यर्थ में बेमन?  
ठहरे अगर किसी के दर पर, कुछ शरमाकर कुछ सकुचाकर  
तो दरबान कह उठा, बाबा, आगे जा देखो कोई घर  
हम रमता बनकर बिचरे पर हमें भिक्षु समझे जग के जन।

1. कवि अपने को कैसा बताता है और क्यों?
2. कवि का अब तक का जीवन कैसा कटा है?
3. कवि अपना (सदन) घर बनाने को इच्छुक क्यों नहीं है?

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2×2=4)

'फिर क्या होगा उसके बाद?  
उत्सुक हो कर शिशु ने पूछा,  
'माँ, क्या होगा उसके बाद?  
'रवि से उज्ज्वल, शशि से सुन्दर,  
नव किसलयदल से कोमलतर।  
वधू तुम्हारी घर आएगी,  
उस विवाह-उत्सव के बाद।'

1. प्रस्तुत कविता में कौन, किससे और क्या प्रश्न पूछता है?
2. प्रस्तुत पद्यांश में किसके विवाह उत्सव की बात हो रही है? माँ के अनुसार बालक की वधू कैसी होगी?

#### खंड - ख

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: 1x3=3

- (क) अध्ययन करने वाले लोग अच्छा लिख पाते हैं। (मिश्र वाक्य में बदलिए)
- (ख) वह कार तेजी से आई और खंभे से टकरा गई। (सरल वाक्य में बदलिए)
- (ग) मजदूर को मेहनत करने पर लाभ नहीं मिलता। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

प्र. 5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए: 1x4=4

- (क) वह जाता है।
- (ख) सफेद घोड़ा तेज भागता है
- (ग) तुम्हें पुस्तक ध्यान से पढ़नी चाहिए।
- (घ) अरे, तुम भी आ गए!

प्र. 6. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए:

1x4=4

1. आज संस्था द्वारा जगह-जगह पेड़ लगाए गए। (कर्तृवाच्य में बदलिए।)
2. मैंने खाना खाया। (कर्मवाच्य में बदलिए।)
3. राधिका क्षण भर के लिए भी शांत नहीं बैठती है - (भाववाच्य में बदलिए।)
4. मूर्तिकार मूर्ति गढ़ता है। (कर्मवाच्य में बदलिए।)

प्र. 7. निम्नांकित काव्यांशों में प्रयुक्त रस पहचानिए :

1x4=4

1. कोउ अंतडिनी की पहिरि माल इतरात दिखावट।  
कोउ चर्वी लै चोप सहित निज अंगनि लावत।
2. कनक भूधराकार सरीरा  
समर भयंकर अतिबल बीरा।
3. मेरो मन अनत सुख पावे  
जैसे उडी जहाज को पंछी फिर जहाज पे आवै।
4. मैया मोरी दाऊ ने बहुत खिजायो।  
मोसों कहत मोल की लीन्हो तू जसुमति कब जायो।

प्र. 8. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1+2+2=5

फ़ादर बुल्के संकल्प से संन्यासी थे। कभी-कभी लगता है वह मन में संन्यासी नहीं थे। रिश्ता बनाते थे तो तोड़ते नहीं थे। दसियों साल बाद मिलने के बाद भी उसकी गंध महसूस होती थी। वह जब भी दिल्ली आते जरूर मिलते-खोजकर, समय निकालकर, गर्मी, सर्दी, बरसात झेलकर मिलते, चाहे दो मिनट के लिए ही सही। यह कौन संन्यासी करता है? उनकी चिंता हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की चिंता थीं। हर मंच में इसकी तकलीफ़ बयान करते, इसके लिए अकाट्य तर्क देते। बस इसी एक सवाल पर उन्हें झुंझलाते देखा है और हिंदी वालों द्वारा ही हिंदी की उपेक्षा

पर दुख करते उन्हें पाया है। घर-परिवार के बारे में, निजी दुख-तकलीफ़ के बारे में पूछना उनका स्वभाव था और बड़े से बड़े दुख में उनके मुख से सांत्वना के जादू भरे दो शब्द सुनना एक ऐसी रोशनी से भर देता था जो किसी गहरी तपस्या से जनमती है। 'हर मौत दिखाती है जीवन को नयी राह'। मुझे अपनी पत्नी और पुत्र की मृत्यु याद आ रही है और फ़ादर के शब्दों से झरती विरल शांति भी।

(क) 'फ़ादर' को कौन-सी चिंता थी?

(ख) लेखक को 'फ़ादर' संन्यासी क्यों नहीं महसूस होते थे?

(ग) फ़ादर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग एक नयी छवि प्रस्तुत की है, कैसे?

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

2x4=8

1. बिस्मिल्ला खाँ जीवन भर ईश्वर से क्या माँगते रहे, और क्यों? इससे उनकी किस विशेषता का पता चलता है?

2. एक कहानी यह भी' लेखिका ने अपनी माँ को व्यक्तित्वहीन क्यों कहा है?

3. आशय स्पष्ट कीजिए -

"बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सब कुछ होम देनेवालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।"

4. 'लखनवी अंदाज' इस निबंध को आप और क्या नाम देना चाहेंगे?

प्र. 10. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

2+2+1

कितना प्रामाणिक था उसका दुख

लड़की को दान में देते वक़्त

जैसे वही उसकी अंतिम पूंजी हो

लड़की अभी सयानी नहीं थी

अभी इतनी भोली सरल थी

कि उसे सुख का आभास होता था  
लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था  
पाठिका थी वह धुंधले प्रकाश की  
कुछ तुकों और लयबद्ध पंक्तियों की

1. माँ के दुःख को प्रामाणिक क्यों कहा गया है?
2. जीवन के सुख-दुख की लड़की को कितनी समझ थी?
3. माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' क्यों लग रही थी?

प्र. 11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=8

1. भाव स्पष्ट कीजिए - रूपांतर है सूरज की किरणों का सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का !
2. परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर राम के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।
3. 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं, कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?
4. कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

प्र. 12. 'आप चैन कि नींद सो सके इसीलिए तो हम यहाँ पहरा दें रहा है' - एक फौजी के इस कथन पर जीवन-मूल्यों की दृष्टि से चर्चा कीजिए। 4

खंड - घ

प्र. 13. निम्नलिखित में से किसी एक विषय निबंध पर लिखिए: 10

- भारतीय ऋतुएँ
- जीवन में खेलों का महत्त्व

प्र. 14. आपकी कॉलोनी में कुछ असामाजिक तत्त्व (Antisocial elements) आकर बस गए हैं। उनकी गुंडागर्दी बढ़ने के कारण नागरिकों का जीवन कठिन हो गया। अपने शहर के पुलिस कमिश्नर को पत्र लिखकर उनकी

शिकायत कीजिए तथा सुव्यवस्था के लिए शीघ्र कदम उठाए जाने की प्रार्थना कीजिए।

5

अथवा

आप अपने घर से दूर में रहने आए हैं, अपनी माता को पत्र लिखकर छात्रावास के आपके अनुभव के बारे में लिखिए।

प्र. 15. धुलाई के किए प्रयोग किए जानेवाले साबुन के विज्ञापन का प्रारूप (नमूना) तैयार कीजिए:

5

C.B.S.E Board

कक्षा : 10

हिंदी A

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 80

**सामान्य निर्देश :**

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

**खंड - क**

- प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×3=6) (1×2=2) 8
- महात्मा गांधी ने कोई 12 साल पहले कहा था - मैं बुराई करने वालों को सजा देने का उपाय ढूँढ़ने लगूँ तो मेरा काम होगा उनसे प्यार करना और धैर्य तथा नम्रता के साथ उन्हें समझाकर सही रास्ते पर ले आना। इसलिए असहयोग या सत्याग्रह घृणा का गीत नहीं है। असहयोग का मतलब बुराई करने वाले से नहीं, बल्कि बुराई से असहयोग करना है।
- आपके असहयोग का उद्देश्य बुराई को बढ़ावा देना नहीं है। अगर दुनिया बुराई को बढ़ावा देना बंद कर दे तो बुराई अपने लिए आवश्यक पोषण के अभाव में अपने-आप मर जाए। अगर हम यह देखने की कोशिश करें कि आज समाज में जो बुराई है, उसके लिए खुद हम कितने जिम्मेदार हैं तो हम देखेंगे कि समाज से बुराई कितनी जल्दी दूर हो जाती है। लेकिन हम प्रेम की एक झूठी भावना में पड़कर इसे सहन करते हैं। मैं उस प्रेम की बात नहीं करता, जिसे पिता अपने गलत रास्ते पर चल रहे पुत्र पर मोहंध होकर बरसाता चला जाता है, उसकी पीठ थपथपाता है; और न मैं उस पुत्र की बात कर रहा हूँ जो झूठी पितृ-भक्ति के कारण अपने पिता के दोषों को सहन करता है। मैं उस प्रेम की चर्चा नहीं कर रहा हूँ। मैं तो उस प्रेम की बात कर रहा हूँ, जो



विवेक युक्त है और जो बुद्धियुक्त है और जो एक भी गलती की ओर से आँख बंद नहीं करता है। यह सुधारने वाला प्रेम है।

1. गांधीजी बुराई करने वालों को किस प्रकार सुधारना चाहते हैं?

उत्तर : गांधीजी बुराई करने वालों को प्रेम, धैर्य तथा नम्रता के साथ समझाकर सुधारना चाहते हैं।

2. बुराई को कैसे समाप्त किया जा सकता है?

उत्तर : यदि हम बुराई को बढ़ावा देना बंद कर देंगे तो बुराई स्वयं समाप्त हो जाएगी।

3. 'प्रेम' के बारे में गांधीजी के विचार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : गांधीजी के अनुसार प्रेम का अर्थ मोह में अंधा होकर अपने प्रिय की गलतियों का समर्थन करना या बढ़ावा देना नहीं है। बल्कि उनके अनुसार उन गलतियों को सुधारना ही सही अर्थों में प्रेम की परिभाषा है।

4. असहयोग से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : असहयोग का मतलब बुरा करने वाले से नहीं, बल्कि बुराई से असहयोग करना है। अर्थात् बुराई का त्याग करना ही असहयोग है।

5. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक 'प्रेम और अहिंसा' है।

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

लिखिए:

(1×3=3)

हम अनिकेतन, हम अनिकेतन!

हम तो रमते राम, हमारा क्या घर, क्या दर, कैसा वतन?

अब तक इतनी यों ही काटी, अब क्या सीखें नव परिपाटी

कौन बनाए आज घरोंदा हाथों चुन-चुन कंकड़-माटी  
ठाठ फ़कीराना है अपना, बाघंबर सोहे अपने तन।  
देखे महल, झोंपड़े देखे, देखे हास-विलास मजे के  
संग्रह के सब विग्रह देखे, जँचे नहीं कुछ अपने लेखे  
लालच लगा कभी पर हिय में मच न सका शिणित उद्वेलन।  
हम जो भटके अब तक दर-दर, अब क्या खाक बनाएँगे घर  
हमने देखा सदन बने हैं लोगों का अपनापन लेकर  
हम क्यों सनें ईंट-गारे में? हम क्यों बनें व्यर्थ में बेमन?  
ठहरे अगर किसी के दर पर, कुछ शरमाकर कुछ सकुचाकर  
तो दरबान कह उठा, बाबा, आगे जा देखो कोई घर  
हम रमता बनकर बिचरे पर हमें भिक्षु समझे जग के जन।

1. कवि अपने को कैसा बताता है और क्यों?

उत्तर : कवि अपने आप बिना घर-बार का बताता है। वह ऐसा इसलिए कहता है क्योंकि वह तो रमता राम है, वह घूमता-फिरता रहता है। उसका न तो कोई घर है, न कोई ठिकाना और न ही उसका कोई देश है।

2. कवि का अब तक का जीवन कैसा कटा है?

उत्तर : कवि ने अपना जीवन घूमने-फिरने में ही व्यतीत कर दिया है। कवि ने फकीराना जीवन जीया है और वैसे ही रहना चाहता है। वह अब किसी नई परिपाटी को नहीं सीखना चाहता है।

3. कवि अपना (सदन) घर बनाने को इच्छुक क्यों नहीं है?

उत्तर : कवि अपना घर बनाने का इच्छुक इसलिए नहीं है क्योंकि वह किसी बंधन में बँधकर नहीं रहना चाहता। कवि ने अनुभव किया है कि घर बनाने के चक्कर में लोगों का अपनापन चला गया।

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2×2=4)

'फिर क्या होगा उसके बाद?  
उत्सुक हो कर शिशु ने पूछा,  
'माँ, क्या होगा उसके बाद?  
'रवि से उज्ज्वल, शशि से सुन्दर,  
नव किसलयदल से कोमलतर।  
वधू तुम्हारी घर आएगी,  
उस विवाह-उत्सव के बाद।'

1. प्रस्तुत कविता में कौन, किससे और क्या प्रश्न पूछता है?

उत्तर : प्रस्तुत कविता में एक बालक अपनी माँ से अपनी बाल-सुलभ जिज्ञासा के कारण प्रश्न पूछता है। बालक हमेशा पूछता है कि फिर क्या होगा उसके बाद और माँ भी बड़ी शांति पूर्वक अपने बालक के प्रश्नों का उत्तर देती रहती है।

2. प्रस्तुत पद्यांश में किसके विवाह उत्सव की बात हो रही है? माँ के अनुसार बालक की वधू कैसी होगी?

उत्तर : प्रस्तुत पद्यांश में शिशु के विवाह की बात हो रही है। माँ के अनुसार उसके घर सूर्य से भी कांतिवान, चाँद से भी सुंदर और नवीन कोपलों से भी कोमल वधू आएगी।

### खंड - ख

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: 1×3=3

(क) अध्ययन करने वाले लोग अच्छा लिख पाते हैं। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : जो लोग अध्ययन करते हैं, वे अच्छा लिख पाते हैं।

(ख) वह कार तेजी से आई और खंभे से टकरा गई। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : वह कार तेजी से आकर खंभे से टकरा गई।

(ग) मजदूर को मेहनत करने पर लाभ नहीं मिलता। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : संयुक्त वाक्य - मजदूर मेहनत करता है, परन्तु उसे लाभ नहीं मिलता।

प्र. 5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए: 1x4=4

(क) वह जाता है।

उत्तर : जाता है - अकर्मक क्रिया, कर्तृवाच्य, सामान्य वर्तमान, अन्यपुरुष, पुल्लिङ्ग, एकवचन।

(ख) सफेद घोडा तेज भागता है

उत्तर : घोडा - जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिङ्ग, एकवचन, 'भागता है' क्रिया का कर्ता।

(ग) तुम्हें पुस्तक ध्यान से पढ़नी चाहिए।

उत्तर : तुम्हें - सर्वनाम, मध्यमपुरुष, पुल्लिङ्ग, एकवचन।

(घ) अरे, तुम भी आ गए!

उत्तर : अरे - विस्मयादि बोधक, एकवचन, पुल्लिङ्ग।

प्र. 6. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: 1x4=4

1. आज संस्था द्वारा जगह-जगह पेड़ लगाए गए। (कर्तृवाच्य में बदलिए।)

उत्तर : आज संस्था ने जगह-जगह पेड़ लगाए।

2. मैंने खाना खाया। (कर्मवाच्य में बदलिए।)

उत्तर : मुझसे खाना खाया गया।

3. राधिका क्षण भर के लिए भी शांत नहीं बैठती है। (भाववाच्य में बदलिए।)

उत्तर : राधिका से क्षण भर के लिए भी शांत नहीं बैठा जाता।

4. मूर्तिकार मूर्ति गढ़ता है। (कर्मवाच्य में बदलिए।)

उत्तर : मूर्तिकार द्वारा मूर्ति गढ़ी जाती है।

प्र. 7. निम्नांकित काव्यांशों में प्रयुक्त रस पहचानिए :

1x4=4

1. कोउ अंतडिनी की पहिरि माल इतरात दिखावट।  
कोउ चर्वी लै चोप सहित निज अंगनि लावत।

उत्तर : वीभत्स रस

2. कनक भूधराकार सरीरा  
समर भयंकर अतिबल बीरा।

उत्तर : अद्भुत रस

3. मेरो मन अनत सुख पावे  
जैसे उडी जहाज को पंछी फिर जहाज पे आवै।

उत्तर : शांत रस

4. मैया मोरी दाऊ ने बहुत खिजायो।  
मोसों कहत मोल की लीन्हो तू जसुमति कब जायो।

उत्तर : वात्सल्य रस

प्र. 8. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1+2+2=5

फ़ादर बुल्के संकल्प से संन्यासी थे। कभी-कभी लगता है वह मन में संन्यासी नहीं थे। रिश्ता बनाते थे तो तोड़ते नहीं थे। दसियों साल बाद

मिलने के बाद भी उसकी गंध महसूस होती थी। वह जब भी दिल्ली आते जरूर मिलते-खोजकर, समय निकालकर, गर्मी, सर्दी, बरसात झेलकर मिलते, चाहे दो मिनट के लिए ही सही। यह कौन संन्यासी करता है? उनकी चिंता हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की चिंता थीं। हर मंच में इसकी तकलीफ़ बयान करते, इसके लिए अकाट्य तर्क देते। बस इसी एक सवाल पर उन्हें झुंझलाते देखा है और हिंदी वालों द्वारा ही हिंदी की उपेक्षा पर दुख करते उन्हें पाया है। घर-परिवार के बारे में, निजी दुख-तकलीफ़ के बारे में पूछना उनका स्वभाव था और बड़े से बड़े दुख में उनके मुख से सांत्वना के जादू भरे दो शब्द सुनना एक ऐसी रोशनी से भर देता था जो किसी गहरी तपस्या से जनमती है। 'हर मौत दिखाती है जीवन को नयी राह'। मुझे अपनी पत्नी और पुत्र की मृत्यु याद आ रही है और फ़ादर के शब्दों से झरती विरल शांति भी।

(क) 'फ़ादर' को कौन-सी चिंता थी?

उत्तर: 'फ़ादर' को हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की चिंता थी।

(ख) लेखक को 'फ़ादर' संन्यासी क्यों नहीं महसूस होते थे?

उत्तर : फ़ादर जिस किसी के भी साथ रिश्ता बनाते थे, वे फिर कभी तोड़ते नहीं थे इसलिए लेखक को फ़ादर संन्यासी नहीं महसूस होते थे।

(ग) फ़ादर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग एक नयी छवि प्रस्तुत की है, कैसे?

उत्तर : प्रायः संन्यासी सांसारिक मोह-माया से दूर रहते हैं। जबकि फ़ादर ने ठीक उसके विपरीत छवि प्रस्तुत की है। परंपरागत संन्यासियों के परिपाटी का निर्वाहन न कर, वे सबके सुख-दुख में शामिल होते। एक बार जिससे रिश्ता बना लेते; उसे कभी नहीं तोड़ते। सबके प्रति अपनत्व, प्रेम और गहरा लगाव रखते थे। लोगों के घर आना-जाना नित्य प्रति काम था। इस आधार

पर कहा जा सकता है कि फ़ादर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग छवि प्रस्तुत की है।

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

2x4=8

1. बिस्मिल्ला खाँ जीवन भर ईश्वर से क्या माँगते रहे, और क्यों? इससे उनकी किस विशेषता का पता चलता है?

उत्तर : बिस्मिल्ला खाँ भारत के सर्वश्रेष्ठ शहनाई वादक थे। वे अपनी कला के प्रति पूर्णतया समर्पित थे। उन्होंने जीवनभर संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की इच्छा को अपने अंदर जिंदा रखा। वे अपने सुरों को कभी भी पूर्ण नहीं समझते थे इसलिए खुदा के सामने वे गिड़गिड़ाकर कहते - "मेरे मालिक एक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।" खाँ साहब ने कभी भी धन-दौलत को पाने की इच्छा नहीं की बल्कि उन्होंने संगीत को ही सर्वश्रेष्ठ माना। वे कहते थे - "मालिक से यही दुआ है - फटा सुर न बख्शें। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।"

इससे यह पता चलता है कि बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे।

2. एक कहानी यह भी' लेखिका ने अपनी माँ को व्यक्तित्वहीन क्यों कहा है?

उत्तर : लेखिका की माँ अशिक्षित एवं घरेलू महिला थीं। लेखिका के माँ के साथ लेखिका के पिताजी का व्यवहार अच्छा नहीं था। वे पूरी तरह से अपने पति के अधीन थीं तथा सदैव उनसे भयभीत रहती थीं। वे कभी पति से लड़ाई-झगडा नहीं करती थीं। यही नहीं वे अपने पति की अनुचित डाँट-फटकार का भी कभी प्रतिरोध नहीं करती थीं। स्त्री के प्रति ऐसे व्यवहार को लेखिका कभी भी उचित नहीं समझती थी। अपने माँ के प्रति ऐसा

व्यवहार लेखिका को उनके पिताजी का ज़्यादाती लगता था। उनकी सारी जिंदगी पति की डाँट-फटकार सुनते तथा अपने बच्चों की माँगों को पूरा करते गुजरी थी। इस प्रकार लेखिका के जीवन में उसके माँ का व्यक्तित्व का कोई विशेष प्रभाव न पड़ सका। इसलिए लेखिका उन्हें व्यक्तित्वहीन कहती है।

3. आशय स्पष्ट कीजिए -

"बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-जिंदगी सब कुछ होम देनेवालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।"

उत्तर : देशभक्तों ने देश को आज़ादी दिलाने के लिए अपना सर्वस्व देश के प्रति समर्पित कर दिया। आज जो हम स्वतंत्र देश में आज़ादी की साँस ले रहे हैं यह उन्हीं के कारण संभव हो पाया है, उन्हीं के कारण आज़ाद हुआ है। परन्तु यदि किसी के मन में ऐसे देशभक्तों के लिए सम्मान की भावना नहीं है, वे उनकी देशभक्ति पर हँसते हैं तो यह बड़े ही दुःख की बात है। ऐसे लोग सिर्फ़ अपने बारे में सोचते हैं, वे केवल स्वार्थी होते हैं। लेखक ऐसे लोगों पर अपना गुस्सा व्यक्त किया है।

4. 'लखनवी अंदाज' इस निबंध को आप और क्या नाम देना चाहेंगे?

उत्तर : इस कहानी का नाम 'झूठा दिखावा' 'नवाबी शान', या 'आडम्बर' भी रखा जा सकता है, क्योंकि नवाब ने अपनी झूठी शान-शौकत को कायम रखने के लिए अपनी इच्छा को ही दबा दिया। साथ ही उनके नवाबी स्वभाव, सामंती-वर्ग की बनावटी जीवन-शैली व दिखावे को सिद्ध करता है।

प्र. 10. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2+2+1

कितना प्रामाणिक था उसका दुख

लड़की को दान में देते वक़्त



जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो  
लड़की अभी सयानी नहीं थी  
अभी इतनी भोली सरल थी  
कि उसे सुख का आभास होता था  
लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था  
पाठिका थी वह धुंधले प्रकाश की  
कुछ तुकों और लयबद्ध पंक्तियों की

1. माँ के दुःख को प्रामाणिक क्यों कहा गया है?

उत्तर : लड़की की माँ ने जीवन में स्वयं कष्ट सहे थे तथा वह जानती थी कि उसकी बेटी नादान है। अतः उसका दुःख प्रामाणिक था।

2. जीवन के सुख-दुख की लड़की को कितनी समझ थी?

उत्तर : जीवन के सुख-दुख से लड़की आंशिक रूप से ही परिचित थी। उसने अभी जीवन के सुख ही देखे थे, वह दुखों से अभी अनजान थी।

3. माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' क्यों लग रही थी?

उत्तर : वह बचपन से अपनी पुत्री को सँभालकर उसका पालन-पोषण एक संचित पूँजी की तरह करती है। जब इस पूँजी अर्थात् बेटी का कन्यादान करेगी तो उसके पास कुछ नहीं बचेगा। इसलिए माँ को अपनी बेटी अंतिम पूँजी लगती है।

प्र.11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

2x4=8

1. भाव स्पष्ट कीजिए - रूपांतर है सूरज की किरणों का सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का !

उत्तर : प्रस्तुत पंक्तियों का तात्पर्य यह है कि फसल के लिए सूरज की किरणें तथा हवा दोनों का प्रमुख योगदान है। वातावरण के ये दोनों अवयव ही फसल के योगदान में अपनी-अपनी भूमिका अदा करते हैं। फसलों की हरियाली सूरज की किरणों के प्रभाव

के कारण आती है। फसलों को बढ़ाने में हवा की थिरकन का भी योगदान रहता है।

2. परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर राम के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।  
उत्तर : राम स्वभाव से कोमल और विनयी हैं। परशुराम जी क्रोधी स्वभाव के थे। परशुराम के क्रोध करने पर श्री राम ने धीरज से काम लिया। उन्होंने स्वयं को उनका दास कहकर परशुराम के क्रोध को शांत करने का प्रयास किया एवं उनसे अपने लिए आज्ञा करने का निवेदन किया।

3. 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं, कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?

उत्तर : गर्मी की चिलचिलाती धूप में रेत के मैदान दूर पानी की चमक दिखाई देती है हम वह जाकर देखते हैं तो कुछ नहीं मिलता प्रकृति के इस भ्रामक रूप को 'मृगतृष्णा' कहा जाता है। इसका प्रयोग कविता में प्रभुता की खोज में भटकने के संदर्भ में हुआ है। इस तृष्णा में फँसकर मनुष्य हिरन की भाँति भ्रम में पड़ा हुआ भटकता रहता है।

4. कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

उत्तर : 'उत्साह' कविता में बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करता है -

- जल बरसाने वाली शक्ति है।
- बादल पीड़ित-प्यासे जन की आकाँक्षा को पूरा करने वाला है।
- बादल कवि में उत्साह और संघर्ष भर कविता में नया जीवन लाने में सक्रिय है।

प्र. 12. 'आप चैन कि नींद सो सके इसीलिए तो हम यहाँ पहरा दें रहा है' - एक फौजी के इस कथन पर जीवन-मूल्यों की दृष्टि से चर्चा कीजिए। 4

उत्तर : फौजी का जीवन बड़ा ही कठिन होता है। फौजी कठिन से कठिन परिस्थिति में अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। इस कर्तव्य पालन में कभी-कभी उन्हें अपनी जान भी कुर्बान करनी पड़ती है परंतु वे पीछे नहीं हटते क्योंकि एक फौजी के जीवन मूल्य अपने देश की रक्षा और नागरिकों की सुरक्षा ही होती है।

खंड - घ

प्र. 13. निम्नलिखित में से किसी एक विषय निबंध पर लिखिए: 10

### भारतीय ऋतुएँ

भारत में प्रत्येक ऋतू दो-दो महीने रहती है। चैत और वैशाख में वसंत, ज्येष्ठ और आषाढ़ में ग्रीष्म, श्रावण और भाद्रपद में वर्षा, अश्विन और कार्तिक में शरद, मार्गशीर्ष और पौष में हेमंत, माघ और फाल्गुन में शिशिर (पतझड़) भारत में प्रायः सभी स्थानों पर ये ऋतुएँ अपना रूप एक बार अवश्य दिखलाती है।

वर्षाऋतू को वैसे तो जीवनदायनी माना जाता है परन्तु कभी-कभी यही जीवनदायनी प्राण घातक भी हो जाती है कभी बाढ़ आने के कारण जन धन सभी का नुकसान होता है। उसी प्रकार सर्दी और गर्मी का मौसम में भी होता है पर जब ठंड या गर्मी अधिक बढ़ जाती है तो लोगों के पास इससे बचने का उपाय न होने के कारण कई लोग मौत के मुँह में भी समा जाते हैं। मौसम में इस परिवर्तन का जिम्मेदार स्वयं मनुष्य ही है जो अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए प्रकृति का जिस प्रकार से हनन कर रहा है उसका परिणाम ही मौसम में इस प्रकार के अनचाहे बदलाव हमें देखने के लिए मिल रहे हैं।

आज पहले की अपेक्षा हमें बाढ़, सूखा, अकाल, अतिवृष्टि बर्फबारी आदि प्राकृतिक घटनाएँ आए दिन देखने को मिलती है। इस सब का प्रमुख कारण प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन है जिसके परिणामस्वरूप इस तरह की घटनाएँ आज आम हो गयी है। अतः मनुष्य समय रहते न

चेता तो वह दिन दूर नहीं जब पूरी मानवता को अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए एक बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

### जीवन में खेलों का महत्त्व

मनुष्य के जीवन में आरंभ से ही खेलों का महत्त्व रहा है। खेलों के बिना मनुष्य अधूरा है। प्राचीन समय में तो उसके मनोरंजन का साधन ही खेल हुआ करते थे। स्वयं के मनोरंजन के लिए उसने विभिन्न तरह के खेलों की रचना भी की है और आगे भी करता रहा है। शरीर को स्वस्थ रखने का एक साधन खेल भी है। आज खेल शिक्षा का आवश्यक अंग समझा जाने लगा है। शारीरिक शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास में सहायक है। सभी प्रकार के कर्तव्यों का पालन स्वस्थ शरीर से ही संभव है। मनुष्य के व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास में खेल-कूद की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। खेलों से स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न होती है जो समाज को जोड़ने में अपनी भूमिका निभाते हैं।

खेल कई तरह के होते हैं - क्रिकेट, हॉकी, लॉन टेनिस, फुटबॉल जैसे खेलों के लिए बड़े मैदान की ज़रूरत होती है। खो-खो, कबड्डी, टेबल-टेनिस जैसे खेल छोटे मैदान में भी खेले जा सकते हैं। यदि हम नियमित रूप से खेलते रहते हैं, तो हमारा स्वास्थ्य ठीक रहता है। हम चुस्त-दुरुस्त बने रहते हैं। इससे बीमारियाँ भी दूर रहती हैं साथ ही डॉक्टर और दवाईयों में आने वाला खर्चा भी कम हो जाता है। विद्यार्थियों के लिए तो खेल उत्तम औषधि के समान है। पढ़ाई करने के बाद खेलने से मन को नई शक्ति प्रदान होती है। खेलने से विद्यार्थियों में उपजा तनाव कम होता है।

आज हर देश में खेलों को आवश्यक और महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। स्कूलों में बच्चों के संपूर्ण विकास के लिए अनेक प्रकार के खेलों की व्यवस्था होती है, इसलिए माता-पिता भी अपने बच्चों को उसी स्कूल में डालना चाहते हैं जहाँ खेलों को ज्यादा महत्व दिया जाता है। खेलों से सहयोग, उदारता, सहनशीलता, अनुशासन भाईचारे आदि की भावना तथा मेल जोल की आदि जैसे गुण विकसित होते हैं। खेलों को व्यवसाय के रूप में अपनाने से खिलाड़ी देश-विदेश में यश और धन दोनों कमा रहे हैं। इन

सब बातों को देखते हुए हम खेलों के महत्त्व को नकार नहीं सकते हैं। कई राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कंपनियां खेल-क्लबों और प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को आर्थिक सहायता दे रही हैं। इसके अतिरिक्त प्रांतीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल प्रतियोगिताओं का समय-समय पर आयोजन हो रहा है। प्रत्येक मनुष्य के लिए आज यह आवश्यक हो गया है की वह अपने आप को खेलों से जोड़कर जीवन को सहेज बनाकर जीने का प्रयास करे।

- प्र. 14. आपकी कॉलोनी में कुछ असामाजिक तत्त्व (Antisocial elements) आकर बस गए हैं। उनकी गुंडागर्दी बढ़ने के कारण नागरिकों का जीवन कठिन हो गया। अपने शहर के पुलिस कमिश्नर को पत्र लिखकर उनकी शिकायत कीजिए तथा सुव्यवस्था के लिए शीघ्र कदम उठाए जाने की प्रार्थना कीजिए।

5

सेवा में,

पुलिस कमिश्नर,

आजाद चौक,

चंडीगढ़

विषय : नगर में बढ़ते हुए असामाजिक तत्वों के विषय में शिकायती पत्र।  
महोदय

मैं माणिकपुर, आजाद चौक का निवासी हूँ। इस पत्र द्वारा मैं आपका ध्यान हमारे क्षेत्र में बढ़ते हुए अपराध की ओर दिलाना चाहता हूँ। हमारे यहाँ पिछले कुछ दिनों से कुछ असामाजिक तत्व आ गये हैं जिसके कारण हमारे क्षेत्र में अपराध की घटनाएँ बढ़ गई हैं। हर आए दिन कहीं न कहीं से चोरी और लूटमार की घटना सुनाई पड़ती ही रहती है जिसके कारण घरों को अकेले छोड़ना मुश्किल हो गया है, हर समय किसी न किसी को घर में रहना ही पड़ता है। इतना ही नहीं नगर में नशीले पदार्थों का विक्रय खुले आम हो रहा है। सड़कों और गलियों में बच्चों और महिलाओं का निकलना सुरक्षित नहीं रह गया है। बस-स्टॉप तथा चौराहे पर गुंडे किस्म के लोग छेड़-छाड़ करते पाए जाते हैं।

अतः आपसे अनुरोध है कि नगर की सुरक्षा को देखते हुए पुलिस की गश्त बढ़ाई जाए ताकि निवासी सुरक्षित महसूस कर सकें।

सधन्यवाद।

भवदीय

कमल शर्मा

2/42, सरला निवास,

आजाद चौक,

माणिकपुर,

चंडीगढ़

दिनांक - 27 फरवरी 2015

अथवा

आप अपने घर से दूर में रहने आए हैं, अपनी माता को पत्र लिखकर छात्रावास के आपके अनुभव के बारे में लिखिए।

रामदेवी छात्रालय

सुभाष मार्ग

नागपुर।

22 फरवरी 20..

आदरणीय माताजी

सादर प्रणाम।

मैं यहाँ ठीक हूँ। आशा करती हूँ, आप सब वहाँ सकुशल होंगे।

आप सबको छोड़कर पहली बार अकेली रह रही हूँ। मुझे आप सभी की बहुत याद आती है। पहले दो-तीन दिन जरा भी मन नहीं लगा परंतु अब बहुत-सी लड़कियाँ मेरी सहेलियाँ बन गई हैं। यहाँ के शिक्षक भी बहुत अच्छे हैं। कपड़े धोना, बिस्तर लगाना, सभी वस्तुएँ ठीक जगह पर रखना मैं सीख रही हूँ। मैं यहाँ मन लगाकर पढ़ रही हूँ।

पिताजी को मेरा प्रणाम और छोटी को प्यार देना।

तुम्हारी लाइली

मीना

प्र. 15. धुलाई के किए प्रयोग किए जानेवाले साबुन के विज्ञापन का प्रारूप (नमूना) तैयार कीजिए:

5

धुलाई बार से कपड़ों की कर लो सफाई,  
किफायती दाम में धुलाई सुहानी।